SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

नवीन – राग निर्माण में भारत रत्न पं. रविशंकर जी का योगदान

प्रगति द्विवेदी, शोध छात्रा, संगीत विभाग
नीतू गुप्ता, (Ph.D.), संगीत विभाग
दयालबाग शिक्षण संस्थान आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
प्रगति द्विवेदी, शोध छात्रा, संगीत विभाग
नीतू गुप्ता, (Ph.D.), संगीत विभाग
दयालबाग शिक्षण संस्थान आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/10/2020
Revised on : -----
Accepted on : 22/10/2020
Plagiarism : 02% on 15/10/2020

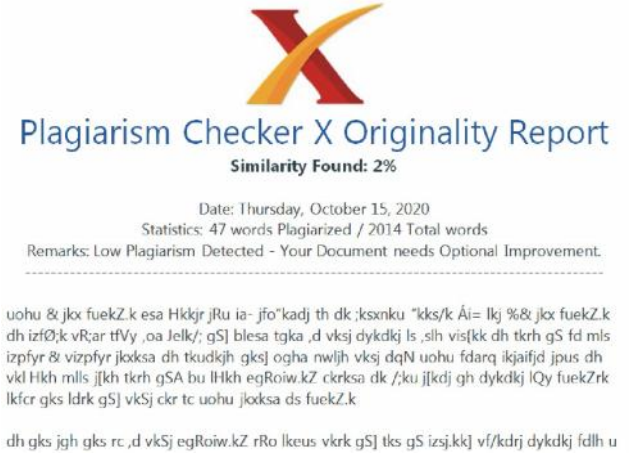
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Thursday, October 15, 2020
Statistics: 47 words Plagiarized / 2014 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

uohu & jkx fuekZ.k esa Hkkjr jRu ia- jfo"kadj th dk ;ksxnku "kks/k Åi= lkj %& jkx fuekZ.k dh izfØ;k vR;ar tfVy ,oa Jelk/; gS] blesa tgka ,d vksj dykdkj ls ,slh vis{kk dh tkrh gS fd mls izpfyr & vizpfyr jkxksa dh tkudkjh gksj ogha nwljh vksj dqN uohu fdarq ikjaifjd jpus dh vkl Hkh mlls j{kh tkrh gSA bu lHkh egRoiw.kZ ckrksa dk /;ku j[kdj gh dykdkj lQy fuekZrk lkfcr gks ldrk gS] vkSj ckr tc uohu jkxksa ds fuekZ.k

dh gks jgh gks rc ,d vkSj egRoiw.kZ rRo lkeus vkrk gS] tks gS izsj.kk] vf/kdrj dykdkj fdlh u

शोध सार

राग निर्माण की प्रक्रिया अत्यंत जटिल एवं श्रमसाध्य है, इसमें जहां एक ओर कलाकार से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि उसे प्रचलित – अप्रचलित रागों की जानकारी हो, वहीं दूसरी ओर कुछ नवीन किंतु पारंपरिक रचने की आस भी उससे रखी जाती है। इन सभी महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखकर ही कलाकार सफल निर्माता साबित हो सकता है, और बात जब नवीन रागों के निर्माण की हो रही हो तब एक और महत्वपूर्ण तत्व सामने आता है, जो है प्रेरणा, अधिकतर कलाकार किसी न किसी प्रेरणा को पाकर राग निर्मिति करते देखे गए हैं। अतः राग निर्माण के लिए कलाकार की सूझबुझ, सृजनशीलता, कल्पनाशक्ति, और विशिष्ट परिस्थितियों में आंतरिक भावनाएं, आदि कई बातें उत्तरदायी होती हैं, किंतु इसके साथ किसी राग के सफल निर्माण में जो कारक सबसे प्रमुख है वह है, स्वर शक्ति। पं. भीष्मदेव चट्टोपाध्याय जी के शब्दों में – ''ये सात स्वर सा, रे, ग, म, प, ध, नि, 7 देवियां दिखाई दे रहीं हैं उनको पकड़ लो बस जीवन सार्थक हो जाएगा।''

वास्तव में **स्वरशक्ति** ऐसी अचूक शक्ति है जिसके प्रयोग एवं प्रभाव से राग में भाव एवं रस की अनुभूति स्वतः ही होती है, जिस प्रकार भाव प्रधान रचना से सौंदर्य या माधुर्य, तथा विचार प्रधान रचना से शांत रस की सृष्टि होती है, उसी प्रकार कल्पना प्रधान रचना द्वारा चमत्कारिता की सृष्टि होती है, और परंपरागत रूप से स्वरों द्वारा राग–रस का समन्वय स्थापित कर राग को स्वरूप प्रदान करना कलाकार की साधना का ही परिणाम होता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत में हमारे पूर्वज आचार्य संगीतविद् कलाकार वर्ग द्वारा कुछ ऐसे विशिष्ट प्रयोग संगीत के गायन–वादन क्षेत्र में हुए हैं जिनके ज्ञान मर्म को समझ पाना असंभव है। उदाहरण स्वरूप कुछ राग जैसे राग दरबारी, राग मियां मल्हार तथा मियां की

सारंग आदि। उपर्युक्त अनुसार भारतीय संगीत के वरेण्य कलाकार पं. रविशंकर जी ने भी विविध परिस्थितियों तथा स्वर वैविध्य के आधार पर अनेक रागों को साकार स्वरूप प्रदान कर भारतीय राग संपदा को धनी किया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में शोधकत्री द्वारा पं. रविशंकर जी द्वारा निर्मित कतिपय रागों का अध्ययन होगा। जिसमें यह जानने का प्रयास किया जाएगा, कि इन रागों की उत्पत्ति किन मूलभूत आधारों पर हुई, साथ ही चयनित रागों का शास्त्रीय विवरण भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

मुख्य शब्द

राग, सृजनशीलता, स्वर, रस।

प्रस्तावना

समय–समय पर संगीत में होने वाले नवीन प्रयोगों से संगीत के तत्सम रूप और सांगीतिक अभिव्यक्ति की शैलियों मे क्रांतिकारी परिवर्तन होते आ रहे हैं, फिर भी उन प्रयोग से संगीत रूपी दीपक का प्रकाश तनिक भी धूमिल नहीं हो पाया है। भारतीय संगीत के इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि संगीत की आधारशिला राग संगीत में क्रांतिकारी एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन समय समय पर होते रहे हैं।

परिवर्तनशीलता से नवीनता का निर्माण होता है और चूंकि भारतीय संगीत में रागों के माध्यम से कलाकार की प्रतिभा, कल्पना और साधना स्वरात्मक सौंदर्य के रूप में व्यक्त होती है इसी कारण रागों में नित नूतनता आना स्वाभाविक ही है। नवीन रागों के आगमन से भारतीय संगीत संपदा में वृद्धि तो होती ही है साथ ही संगीत कलाकारों की रचनात्मक प्रतिभा व मौलिक कल्पनाशक्ति का भी आभास मिलता है।

राग निर्मिति के नियमों में किन्हीं दो अथवा अधिक रागों के सम्मिश्रण द्वारा अथवा राग के स्वर या उसके रूप परिवर्तन द्वारा एक नूतन राग का निर्माण हो सकता है, परंतु यह एक कुशल एवं सिद्धहस्त कलाकार द्वारा ही संभव है । उ. अलाउद्दीन खां, पं. कुमार गंधर्व, पं. भीमसेन जोशी, पं. देवव्रत चौधरी, उ. अमज़द अली खां आदि कलाकार नवीन राग निर्माताओं की सूची में प्रमुख हैं। श्रेष्ठ कलाकार की समस्त विशेषताओं से युक्त पं. रविशंकर जी का नाम भी सफल सृजनकर्ताओं में परिगणित किया जाता है।

पं. रविशंकर

पं. रविशंकर जी यूं तो सितार वादक थे, अपने अदम्य उत्साह, लगन, प्रेम तथा प्रतिभा के कारण आपने सितार पर अधिकारपूर्वक वादन का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया। शास्त्रीय संगीत में पूर्ण निपुणता प्राप्त करने के साथ साथ पं. रविशंकर जी के भीतर कला में नवीनता लाने के लिए अदम्य उत्साह था। इसी कारण एक और जहां उन्होंने पारंपरिक सितार वादन में ध्रुवपद व बीन अंग के आलाप को चैनदारी से प्रस्तुत करने की परंपरा का निर्वाह किया वहीं दूसरी ओर उन्हें चमत्कारी कलाकार भी कहा जाता है, आपकी वादन तकनीक बहुत जटिल और श्रमसाध्य है। आपके वादन में लय ताल की प्रधानता के साथ मिज़राब के बोलों का भी ख़ासा प्रभाव है।

नव राग रचना

नव प्रयोगों की दृष्टि से आप वादन और प्रस्तुति दोनों में ही नवीन प्रयोग करते रहे हैं – चाहे वह सितार में प्रत्यक्ष परिवर्तन हो या फिर एकल प्रस्तुति के स्थान पर जुगलबंदी की प्रस्तुतियां हों। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में पं. रविशंकर जी द्वारा रचित कतिपय नवीन राग–रूपों का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जो इस प्रकार हैं:

1 नट भैरव 2 बैरागी 3 रंगेश्वरी 4 परमेश्वरी, 5 बैरागी तोड़ी

उपर्युक्त रागों का परिचय इस प्रकार हैः

राग नट भैरव

आरोह : स रे ग म प ध़ नि सं

अवरोह : सं नि ध़ प म ग म रे स

परिचय

प्रस्तुत राग नट व भैरव रागों के मिश्रण से निर्मित है। इसमें रेरे गग म नट तथा ग म ध़ ध़ प भैरव के स्वर समूह जोड़े जाते हैं। जाति वक्र संपूर्ण है। वादी मध्यम संवादी षडज है। गायन समय प्रातःकाल है।

सन् 1945 में पंडित जी द्वारा निर्मित नट भैरव सबसे अधिक प्रचलित व श्रुति मधुर राग है। पंडित जी ने महाराष्ट्र में एक ऐसा गायन सुना था जिसमें दोनों रिषभ का प्रयोग हुआ था। जिसमें पहले नट और बाद में भैरव राग को प्रदर्शित किया गया था।

पंडित जी के ऊपर इसका इतना अधिक प्रभाव हुआ कि उन्होंने मात्र शुद्ध रिषभ को लेकर नट एवं भैरव अंग को मिश्रित करके बजाना प्रारम्भ किया। अतः इस प्रकार इस राग का यह स्वरूप पं. रविशंकर जी की ही देन है किंतु प्रस्तुत राग के विषय में कई मत भी प्रचलित हैः

इस राग के पूर्वांग में नट तथा उत्तरांग में राग भैरव के स्वर समूह का प्रयोग किया गया है। प्राचीन काल में इस राग को 'हिजाज भैरव' के नाम से जाना जाता था। इस राग में शुद्ध रिषभ के प्रयोग के कारण यह राग भैरव के अन्य सभी प्रकारों से भिन्न है। राग नट के स्वर इस राग में इस प्रकार प्रयोग किये जाते हैं। स रे रे ग म, रे रे स, स रे रे ग म, रे ग म प, स रे स इत्यादि, तथा – म प ध़ ध, नि सां ध़ ध, नि ध़ पये स्वर समूह भैरव के है। – ***पं. रामाश्रय झा,*** *अभिनव गीतांजलि, भाग –4 पृ. सं. 51*

राग बैरागी

आरोह : स रे़ म प नि़ सं

अवरोह : सं नि़ प म रे़ स

परिचय

इस राग का निर्माण 1949 में हुआ था। जब पं. जी ने A.I.R. Join किया था तब आपने इस राग को स्वरूप प्रदान किया था। इसे संगीत पत्रिका हाथरस में प्रकाशित भी किया गया था जिसमें पं. जी की बंदिश ''मन पंछी बावरा'' ख्याल था। उसके बाद यह राग गायकों और वादकों के मध्य द्रुत गति से प्रचार में आ गया और बैरागी भैरव के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इस राग में रिषभ तथा निषाद कोमल हैं। गांधार एवं धैवत स्वर पूर्णतः वर्जित हैं अतः जाति औडव औडव है। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षडज है। समय दिन का प्रथम प्रहर है।

षडज तथा मध्यम स्वरों पर न्यास करना राग की रंजकता बढ़ाता है। गायन समय प्रातःकाल है। इसके पूर्वांग में जोगिया तथा उत्तरांग में मध्यमादि सारंग का आभास मिलता है। किंतु जोगिया में धैवत और मध्यमादि सारंग में ऋषभ स्वर का प्रयोग होने के कारण बैरागी का अस्तित्व इन रागों से पृथक रहता है। कुछ गुणी जन इसमें गांधार का प्रयोग मींड तथा कण रूप में क्षम्य मानते हैं। यह पूर्वांगवादी राग है तथा इसकी प्रकृति मधुर शांत एवं गंभीर है। इस राग को प्रचार में लाने का श्रेय विश्व विख्यात सितार वादक पं0 रविशंकर को है। पकड़ – प़ नि़ रे़ – सा – नि़ प़ नि़ सा रे – सा –***ऋषीश्वर तिवारी,*** *संगीत पत्रिका लक्षण संगीत अंक जनवरी 1971 पृ. सं. 113।*

राग रंगेश्वरी

आरोह : स रे ग़ म प नि सं

अवरोह : सं नि प म ग़ रे स

परिचय

राग रंगेश्वरी पं. रविशंकर जी द्वारा सन् 1968 में बनाया गया था। यह प्रारंभिक सायंकालीन राग है। इसके आरोह तथा अवरोह में धैवत स्वर वर्जित दिखाई देता है अतः इस की जाति षाडव कही जा सकती है। राग के स्वरों में गंधार स्वर कोमल विकृत तथा अन्य सभी स्वर शुद्ध प्रयोग किए जाते हैं। वादी स्वर पंचम तथा संवादी स्वर षडज है। इसके अतिरिक्त राग में मध्यम स्वर पर भी न्यास किया जाता है और ग म ग स्वर संगति का विशेष प्रयोग किया जाता है।

चलन – पनि सं – रे ग म – ग प म प ग म ग–रेरे स – रे ग म – प नि प म – ग म ग रे स । रे ग म प – प नि प म ग म ग रे स। ग म प नि सं – प नि सं रें मं गं रें सं– नि सं नि प– म प ग प म प ग म ग म ग रे स।

प्रस्तुत राग के पूर्वांग में यदि स रे ग म पर दृष्टिपात करें तो पाएंगे कि अमुक स्वर संगति राग काफी के पकड़ के समान जान पड़ती है। वहीं इस राग में, काफी थाट के एक अन्य राग – राग भीम की छाया भी देखी जा सकती है, जिसमें कोमल गंधार तथा शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है।

राग परमेश्वरी

आरोह : स रे ग म ध नी सां।
अवरोह : सां नी ध ग रे सा।

परिचय

सन् 1968 में पंडित जी द्वारा रचित राग परमेश्वरी संगीत जगत में सबसे अधिक प्रचलित हुआ है। इस राग में रिषभ, गंधार व निषाद कोमल है। पंचम वर्ज्य है इस प्रकार इसकी जाति षाडव–षाडव है इसका वादी 'मध्यम' संवादी 'षड्ज़' है। इस राग का गायन समय प्रातः काल है। राग परमेश्वरी में बागेश्री, भैरवी तथा बिलासखानी तोड़ी की छाया आती है।

कहा जाता है कि पं. जी ने मूर्च्छना पद्धति के आधार पर कामेश्वरी, परमेश्वरी, गंगेश्वरी तथा रंगेश्वरी आदि रागों की रचना की है। ऐसा कहा जाता है कि राग कामेश्वरी के मंद्र धैवत को षडज मानकर गाने बजाने से राग परमेश्वरी राग का आर्विभाव होता है।

राग बैरागी तोड़ी

आरोह : स रे ग प नि सं
अवरोह : सं नि प ग रे स

परिचय

राग बैरागी तोड़ी को पं. रविशंकर ने प्रचलित किया है। ये गाने में कठिन लेकिन मधुर राग है। राग बैरागी के मध्यम की जगह कोमल गांधार लेने से बैरागी तोड़ी अस्तित्व में आता है। यह राग तोड़ी थाट के अंतर्गत आता है। इस का चलन तोड़ी राग के समान है इसलिए इसमें गांधार अति कोमल लिया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। इसका विस्तार तीनों सप्तक में किया जाता है।

पं. रविशंकर जी ने इस राग का निर्माण सन् 1970 में किया था। इस राग के अन्तर्गत रिशभ, गंधार, निषाद कोमल है इस राग का वादी स्वर 'षड़्ज' व संवादी स्वर 'पंचम' है । इस राग की जाति औडव औडव है। क्योंकि इस राग के वर्जित स्वर म और ध है।

इसका गायन समय प्रातः काल है। इस राग को तोड़ी थाट के अन्तर्गत रख सकते हैं। इस राग में बैरागी तथा बिलासखानी तोडी का मिश्रण है।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत में जहां बंदिशें हैं तथा परंपरागत गायन वादन की परिपाटी है, वहीं भारतीय संगीत, कलाकार को मंच पर स्वच्छंद रूप से अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर प्रस्तुति और बढ़त करने की भी स्वतंत्रता प्रदान करता है। इस स्वतंत्रता से ही नवीनता की सृष्टि के द्वार खुलते हैं, और यही भारतीय संगीत के चिरकालिक लोकप्रिय होने का कारण है। इस श्रृंखला में नवीन रागों का भी महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि भारतीय शास्त्रीय संगीत रागदारी संगीत भी है। अतः इन रागों और इनके निर्माताओं की उपादेयता और भी बढ़ जाती है, और बात जब पं. रविशंकर जी जैसे दिग्गज रचनाकार की हो तो यह कहना अवश्यम्भावी है कि उनके द्वारा रचित अधिकतर राग सुग्राह्य है तथा प्रचलित है, यह उनकी कुशलता तथा रचनाधर्मिता के लिए सर्वश्रेष्ठ सम्मान है।

संदर्भ सूची

1. गर्ग, लक्ष्मीनारायण, (जूलाई 2005), *पं. रविशंकर द्वारा नव निर्मित रागों का शास्त्रीय विवरण*, संगीत सम्प्रति।
2. थत्ते, अनया, *नवराग निर्मिति – एक विचार मंथन*, संगीत सम्प्रति।
3. चक्रवर्ती, कविता, (2001), *भारतीय संगीत को महान संगीतज्ञों की देन*, राजस्थानी ग्रन्थकर जोधपुर, प्रथम संस्करण।
4. स्वतंत्र भारत के नवनिर्मित कतिपय रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन शोधकत्री – मालती श्रीवास्तव, डी. ई. आई. 1992 (शोध प्रबंध)
5. आळसी, विजय, (अक्टूबर 2011), *भारतीय संगीत में नव राग निर्मिति की संभावनाएं*, संगीत कला विहार।

****